ॐ

शक्ति प्रबोधक शिक्षा व्याख्यान (Club)

बालसभा गुरुकुल—भारत

कार्यालय—हनुमान तीर्थ (नक्की) माउन्ट आबु पर्वत

जिस जाति धर्म को है नहीं,
निज जाति धर्म अनुराग ।
निश्चय उसको जानिए,
फुट गये हैं भाग्य ॥

"विश्व बाल गोष्ठि" भाव संचार प्रणाली, तथा अध्यात्म विद्या:

निवेदक :—स्वामी आनन्दवन

—प्र० कार्यालय—

ग्रा० वमौथ—जलेश्वर मठ

पत्रालय, शान्तिसदन, गढवाल; उ० प्र० (बद्रिशखण्ड)

मूल्य—आत्मदान

एस. एन. मगोत्रा प्रिंटिंग प्रेस, जम्मू ।

भारत के लिये कार्य—योजना

मैं अपने देशवासियों से कहता हूँ कि अब तक जो तुमने किया, सो अच्छा किया है, अब इस समय और भी अच्छा करने का मौका आया है।

यह मेरी कार्य प्रणाली है—हिन्दूओं को यह दिखा देना कि उन्हें कुछ भी छोड़ना नहीं पड़ेगा, केवल उन्हें ऋषियों द्वारा प्रदर्शित पथ पर चलना होगा और सदियों की दासता के फल (असर गुलामी) स्वरुप प्राप्त अपनी जड़ता को उखाड फैंकना होगा।......हमें आगे वढ़ना ही चाहिये..... अपने स्वयं के भाव के अनुसार, अपने स्वयं के पथ से।

प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में एक मुख्य प्रवाह रहता है, भारत में वह धर्म है।

ऊं–विश्व यात्रा–धर्म परिषद्,
अमेरीका, लंडन के पश्चात।....
भारत में,
स्वामी विवेकानन्द जी के आत्म संदेश।

ॐ

सन्देश

प्रिय बालको,

आध्यात्मिक शिक्षा आप के लिए उतनी ही अनिवार्य है जितनी अन्य लौकिक विषयों की शिक्षा आध्यात्मिक शिक्षा पूर्ण है । बाकी सब लौकिक शिक्षायें अपूर्ण हैं । आज के वैज्ञानिक युग में जीवन रुपी नैय्या को चलाने केलिए दोनों शिक्षायें आवश्यक है ।

हमारा भारत वर्ष अवनति की ओर क्यों जा रहा है क्योंकि बालक व बालिकायों को आध्यात्मिक शिक्षा नही दी जा रही । भारत की ऐसी दयानीय दशा को देख कर बाल सभा के संचालक परम पूज्य श्री स्वामी आनन्दवन जी महाराज को अपनी तपो भूमि जलेश्वर में बालको के माध्यम से भारत की सेवा करने का दृढ़ संकल्प उत्पन्न हुआ । परमपूज्य स्वामी जी महाराज कहते हैं । बालक व बालिकाओं को आध्यत्मिक शिक्षा देने से बड़े हो कर वह आत्म विश्वासी व निर्भय हो कर अपने अपने क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं । उन्होंने भारत के बहुत स्थानों पर बाल सभा खुलवाई । हमारे अखनूर में भी आज से 24 साल पहले नींसिंग मन्दिर में बाबा गोपाल दास जी के नियन्त्रण में बाल सभा खुलवाई थी । मैं भी उनकी बाल सभा की एक बान्लिका हूं । बाल सभा के कारण ही आज मुझे आध्यात्मिक मार्ग में काफी जिज्ञासा है। यह किताब उसी समय की है। इसमें स्वामी जी महाराज ने सन्त महापुरुषों के तथा ग्रन्थो के सत्य संकल्पों को एकित्र करके लिखा है। आशा हैं सब बालक इसे अच्छी तरह पढ़ कर इस से पूर्ण लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे ।

मुझे आपको यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि इस संस्करण की छिपाई का सारा खर्च मेरी पूज्या माता श्रीमती सत्यावन्ती सराफ ने दिया है ।

द्वितीय संस्करण 1000 अप्रैल 1982

—डॉ० कु० विजय सराफ

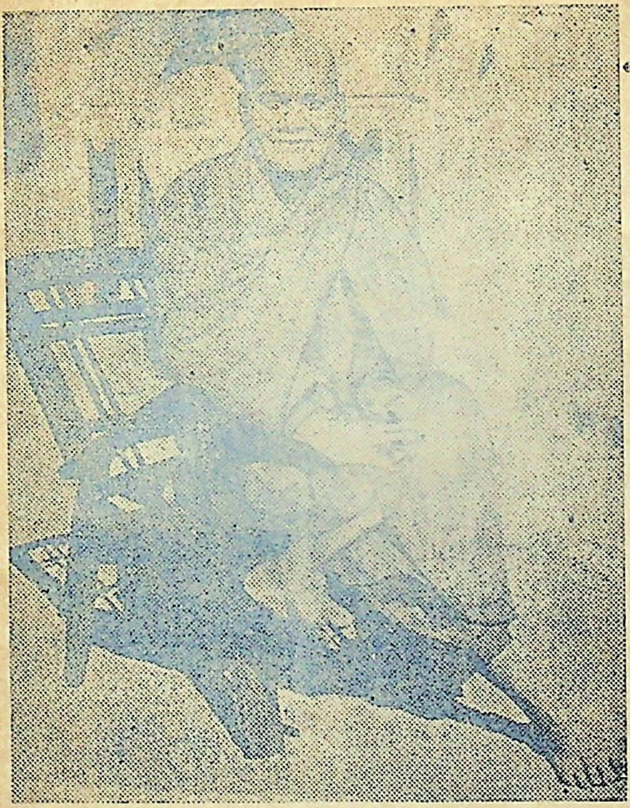

भारत में बाल सभा के संचालक
परम पूज्य श्री स्वामी आनन्दवन जी महाराज

"आध्यात्म विद्या"

जूनियर हाईस्कूल, उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थी, बाल, तरुण, तथा युवक सभा के प्रति-श्रोत्रिय प्रथा क्रमउपयाग में अभ्यास नियम—जानकारी विषयः——

(१) चुने हुए भजन प्रार्थना वचन आदि पठन।
(२) श्री, सां० रामायण—एवं श्री भगवद्गीता स्वाध्याय।
(३) भारतीय महापुरुषों की तथा राष्ट्रपुरुषों की जीवनी।
(४) चरित्र निर्माण की कहानियां—गीता प्रेस साहित्य।
(५) उपासना प्रार्थना और नाम साधनाकी विशेष जानकारी।
(६) ॐ,कार एकाक्षर ब्रह्म जिज्ञासा के प्रति सा० का० उपनिषद्।
(७) भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति की विशेष—जानकारी।
(८) व्यक्तित्वका निर्माण—खाद्य, रहन सहन, छंद, व्यायाम, भाषा, ध्येय, प्रतिज्ञाएं आदि से चर्चा तथा जीवन का दैनिक रुटीन [Time table] सूर्य नमस्कार तथा आसन संबंधी जानकारी।

प्रतिज्ञाएं

हमारी बाल, तरुण, तथा युवक सभा का सदस्य निम्नलिखित प्रतिज्ञाएं लेकर उनका पालन करेगा:—हरिः ॐ

(१) मैं—युवक सभा के सभी व्याख्यनों में उपस्थित रहूंगा, अपने दैनदिन कार्यक्रम के अनुसार उपासना—अध्ययन तथा

व्यायाम लेता रहूंगा ।

(२) किसी की निंदा नहीं करूंगा व्यसन नहीं रखूंगा—झूठ नहीं बोलूंगा । "अपने तन, मन, धन, से

(३) जन्म भूमि गौरव——राष्ट्रीय आत्मप्रेम तथा विश्व कल्याण कामना, प्राणिमात्र के हितैषी अभिप्राय के प्रति सदैव सहानुभूति करुंगा ।

(४) सदा सत्य के पक्ष में रहकर असत्य अन्याय का विरोध करुगाँ ।

(५) नियमित रुप से ईश्वर की उपासना करुगा दूसरे धर्मों के प्रति — उसके रहनसहन, उपासना, का कभी भी निरादर नहीं करुगां, विश्व के सभी धर्मों में समादार (प्रेम) अपनाऊंगा

हे प्रिय,

बालको!

भगवान् ऋषभदेव जी ने बताया ...

श्लोक, श्रीमद्भागवत–५, ५, १८

ॐ तत् सत् ॐ

गुरुर्न सस्यात स्वज़नो न स स्यात्

पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात् ।

दैवं न तत् स्यान्न पतिश्च स स्या

न्न मोचयेद यः समुपेतमृत्युम् ।। ॐ

व्याख्या—अर्थ ....

वही गुरु मित्र, स्वजन, तथा माता पिता और ईश्ट देव है, जो अपने आतम सम्बन्धीयों को, मृत्यु भय अज्ञान से छुड़ावै, वही पति हैं जो अपने धर्मपत्नि, दास इत्यादि स्वजनों को प्रकाश की ओर आकर्षित करे, अतः निश्चय आने वाली मृत्यु से प्राणीमात्र को बचावे ।

प्रिय बालकों ..... हमारे विश्वप्रिय

श्री मान्..... बापूजी के उदगार,

"भारतीभवन की पत्रिका द्वारा प्राप्त, संदेश"

श्रेष्ठ महात्मा गांधीजी ने बताया है ॥

यदि भारत को आध्यात्मिक दृष्टि से दिवालिया नहीं बन जाना है तो,—बालकाओं के लिये धर्म शिक्षा कम से कम उतनी ही आवश्यक समझी जानी चाहिए, जितनी कि अन्य लौकिक विषयों की शिक्षा आवश्यक हैं।

बेशक धर्मग्रन्थ धर्म का स्थान नहीं ले सकते परन्तु यदि हम साक्षात् धर्म आरुढ उन्हे नही कर सकते तो हमें अपने बालक-बालिकाओं को धर्म ग्रन्थों का ज्ञान तो देना ही चाहिये।

मनुस्मृति

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रयनिग्रहम् ।
धीर्दिद्या सत्यम क्रोधो दशकं धर्मलक्षम् ॥

श्री मनु महाराजने मानव धर्म के दस लक्षण बतलाये है। धैर्य अथवा उतम धारणा, क्षमा, मल का दमन करना, किसी प्रकार चोरी न करना, मन शरीर की शुद्धि, इन्द्रियों का नियन्त्रण, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोधः—ये दस मानव धर्म के लक्षण है। यह गुण आये बिना मानव कदापि सुखी नहीं होने को ॥ वास्तव में सत्य श्रद्धा, प्रेम, ज्ञान कीर्ति, एवं सम्पूर्ण शक्तितयां, हमारे लिगे प्रभुने प्रदान की है, हम योग्य बने ओर यर्थाथ जीवन यापन, धर्म धारणा के प्रति, दृढ संकल्पवान बनें। योग्यता, स्वाभिमान

हमारी अपनी साक्षात् आत्मशक्ति है, अतः अब हमें अपने जीवन सस्कार – तथा उसके श्रेय इन सब श्री, मानव साधन को साध्य बना लेना कर्तव्य है।

"हमारे—सद्गुरु की शिक्षा"

वेदका अध्ययन कर चुकने पर गुरु अपने शिष्यको नीचे लिखे वेद-धर्मोका उपदेश करते है —

सत्य वद धर्म चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः ।

(तैत्ति० १।११।१)

सत्य बोलो। धर्मका आचरण करो। स्वाध्यायका कभी त्याग न करो. आचार्यको गुरु-दक्षिणा देकर प्रजाके सूत्रको न काटो अर्थात ब्रह्म-चर्य आश्रमका पालन कर चुकनेंपर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करो। सत्यका कभी किसी अवस्थामें भी त्याग न करो। धर्मका कभी त्याग न करो। कल्याणकारी कर्मोंका त्याग न करो। साधनकी जो विभूति प्राप्त है, उसे कभी मत त्यागो। स्वाध्याय और प्रवचनमें कभी प्रमाद न करो।

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव अतिथि-देवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि।

(तैत्ति० १।११।२)

देवकर्म (यज्ञ) और पितृकर्म (श्रद्धा, तर्पण आदि) का कभी त्याग न करो माताको देवरूपसे पूजो। पिताको देवरूपसे पूजो। आचार्यको देवरूपसे पूजो। अतिथिको देवरूप से पूजो। जो कर्म

निन्दारहित हैं उन्हींको करो (अन्य (निन्दित कर्म मत करो । हमारे (गुरुके श्रेष्ट आचरणोंका अनुसरण करो, दूसरोंका नहीं ।

जो ब्राह्मण अपने मे श्रेष्ठ हों उन्हें तुरंत बैठने के लिये आसन दो । जो कुछ दान करो, श्रद्धा से करो अश्रद्धा से नहीं । श्री के लिये दान करो, लक्ष्मी चञ्चल है, प्रभु की सेवा में उसे समर्पण नहीं करोगे तो वह तुम्हें त्याग कर चली जायगी । लोक-लाज के लिये ही दान करो । शास्त्र से डरकर भी दान करो, दान करना उचित है इस विवेक से दान करो । अपने किसी कर्म अथवा लौकिक आचार के सम्बन्ध में मन में कोई शङ्का उठे, तो अपने समीप रहने वाले ब्राह्मणों में जो वेदविहित कर्मों में विचारशील हों, समदर्शी हों, कुशल हो, स्वतंत्र हों, (किसी के दबाव में आकर व्यवस्था देने वाले न हों), क्रोधरहित अथवा शान्तस्वभाव हों और धर्म के लिए ही कर्तव्यपालन करने वाले हों, वे जिस प्रकार का आचरण करें उसी प्रकार का आचरण तुम करो । यही आदेश है, यही उपदेश है, यही देवों का भाव है, यही आज्ञा है, ऊपर बतलायी हुई प्रणाली से ही आचरण करने चाहिये । इसी प्रकार आचरण करना चाहिये ।

(तैत्तिरीय उपनिषद)

नोट—गोरखपुर उ० प्र० गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित, बालकों के प्रति अध्ययन करने योग्य (पुस्तक-नाम)
उपनिषदों के चौदह रत्न । ॐ

ज्ञानी माता मदालसा

(अपने पुत्रों को हालरडा-लोरी-गीत द्वारा ज्ञान दे रही है ।)

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि
संसारमायापरिवर्जितोऽसि ।

संसारस्वप्नस्त्यज मोहनिद्रां
मदालसा वाक्यमुवाच पुत्रम् ॥१॥

अर्थ—हे पुत्र ! तू शुद्धस्वरूप, ज्ञानस्वरूप, निरंजन और संसार रूपी माया से रहित है । संसार स्वप्न स्वरूप है, अत: मोह निद्रा का परित्याग करो ।

शुद्धोऽसि रे तात न तेऽसि नाम
कृतं हि तत कल्पनयाऽधुनैव ।
पञ्चात्मकं देहमिदं न तेऽस्ति
नैवाऽस्य तद् रोदिषि कस्य हेतो: ॥२॥

अर्थ—हे तात्, तू शुद्ध स्वरूप है। तेरा कोई नाम नहीं है । वह तेरा नाम अभी कल्पना से रखा गया है। यह पंच-भौतिक शरीर तेरा नहीं है न तू उसका है, फिर तू क्यों रोता है ?

———

श्री भोले बाबा कृत :—

॥ आत्मा गीत ॥

वह सच्चिदानन्द आत्मा तुही है ॥
सदा सिद्ध योगी धरे ध्यान जाका,
अमानी विरागी लहें ध्यान जाका ।
जिसे वेद वाणी सदा गा रही हैं ।
वही सच्चिदानन्द आत्मा तूही है ॥१॥
जिसे पूजते भोग के हेतु कर्मी,

जिसे पूजके पाये ऐश्वर्य धर्मी ।
जिसे जानता एक तत्वज्ञ ही है,
वही सच्चिदानन्द आत्मा तूही है ॥२॥
जिसे यज्ञ दानादि से पूजते हैं,
जिसे ढूंढते तीर्थ में घूमते हैं ।
जिसे जानने भक्ति श्रद्धा कही है ।
वही सच्चिदानन्द आत्मा तू ही है ॥३॥
नहीं आदि न मध्य, न अन्त जाका,
उज्जाला सभी विश्व में व्याप्त जाका ।
जहां सृष्टि अज्ञान से भासती है,
वही सच्चिदानन्द आत्मा तू ही है ॥४॥
सुनो देख भी लो कहा जाय नाहीं,
जिसे देख दृष्टा रहे भिन्न नाहीं,
जिसे पाय के शेष पाना नहीं है,
वही सच्चिदानन्द आत्मा तू ही है ॥५॥
नहीं जन्म लेवे मेरे भी नहीं है,
यहां भी वहां भी वही एक ही है,
घनी दूर जो पास से पास भी है ।
वही सच्चिदानन्द आत्मा तू ही है ॥६॥
महादेव जो सर्व का ही पिता है,
सभी विश्व जा देव में भासता है ।
जहां बुद्धि जाके विला जावती है,
वही सच्चिदानन्द आत्मा तू ही है ॥७॥
जिसे शास्त्र वे मांपका हैं बताते,
जिसे विष्णु का धाम है वेद गाते ॥

प्रमाता सभी का स्वयं सिद्ध ही है,
वही सच्चिदानन्द आत्मा तू ही है ।८।
शान्ति ॐ !!!

ॐ तत् सत ॐ

भगवान श्री शङ्कराचार्य--ज्ञानोपदेश प्रश्नोत्तरी

"प्रश्न"	"उत्तर"
१. गुरु कौन है ?	जो केवल हित का ही उपदेश करने वाला है।
२. शिष्य कौन हैं ?	जो गुरु का भक्त है, वही।
३. वड़ा भारी रोग क्या है ?	वार वार, जन्म लेना।
४. उसकी दवा क्या है ?	परमात्मा के स्वरूप का मनन ही।
५. भूषणों में उत्तम भूवण । क्या है ?	उत्तम चरित्र।
६. सवसे उत्तम तीर्थ क्या है ?	अपना मन जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ है।
७. सदा मन लगाकर सुनने योग्य क्या है ?	ॐ वेद, और गुरू का वचन।
८. परमात्मा की प्राप्ति के क्या क्या साधन हैं ?	सतसग, सात्विक, विचार दान परमेश्वर के स्वरूप का मनन और सतोष।
९. महात्मा कौन है ?	सपूर्ण ससार से जिनकी, राग द्वेष रूप आसक्ति नष्ट हो गई है, जिनका अज्ञान नाश हो चुका है,

जो कल्याण रूप आत्मतत्व में स्थित है ।

११ प्राणियों के लिये वास्तव में ज्वर (बीमारी) क्या है ? — चिन्ता (शोक)

११. मूर्ख कौन है ? — जों विचार हीन है ।

१२. वास्तव में जीवन कौन सा है ? — जो सर्वथा निर्दोष है ।

१३. जगत को किसने जीता — जिस ने मन को जीता ।

१४. यथार्थ लाभ क्या है ? — आत्म साक्षात्कार—परमात्मा की प्राप्ति है वही ।

१५. दृढ़-धीर-साहसी, कौन है ? — जिन्हें द्रोह मोह क्रोध न हो ।

१६. वास्तव में—विद्या-ज्ञान-क्या है ? — जो (यथार्थ) मुक्ति का कारण है तथा जो परमात्मा को प्राप्त कराने वाली है ।

१७. संसार दुःख अज्ञान हरने वाला कौन है ? — वेद से उत्पन्न ज्ञान ।

१८. स्वर्ग देने वाली क्या है? — जीव मात्र की अहिंसा ।

१९. वास्तव में, सुख से कौन सोता है ? — आत्मज्ञानी, जो परमात्मा के स्वरूप में स्थित है ।

२० सदा प्रसन्न कौन जागता है ? — सत् औप असत् के तत्व का जानने वाला ।

२१. घोर नरक क्या है ?	अपना शरीर ।
२२. स्वर्ग का पद क्या हैं ?	छल, कपट, तृष्णा का नाश होना ।
२३. दरिद्र कौन है ?	भारी तृष्णा वाला ।
२४. और धनवान कौन हैं ?	जिसे सब तरह से सन्तोष हो ।
१५. वास्तव में फांसी क्या हैं?	जिसे योग्यता नही, जो मैं और मेरा पन है ।
२६. मृत्यु क्या है ?	अपनी अपकीर्ति (बेईज्जति)
२७. जीते-जी मरा कौन है ?	जो पुरुषार्थहीन, है (आलसी)
२८. अमर मोक्ष का कारण क्या कहा गया है ?	वही आत्म ज्ञान ।
२९. किस किस का संग नहीं करना चाहिये ?	मूर्ख—नीच—दुष्ठ—पापी ।
३०. हृदय बीच कांटों की तरह क्या चुभता है ?	अपनी मूर्खता ।
३१. सब लोगों के लिये क्या त्यागना अत्यन्त कठिन है?	बुरी वासना और पाप की इच्छाएं ।

———

★ अध्यात्म विद्या ★

साहित्य संस्कार विज्ञान

भगवान्—तुलसी, उपदेश, त्रिपुटि संस्कार मानस श्री रामायण—भक्ति योग, धर्म निर्देश ।

बड़े भाग ते नर तन पावा:—"मनुष्यशक्ति" यह जगत हमारी गति—मति पर निर्भर है:—प्रिय बालको ! जीवन के श्री उपयोग में, धर्म शिक्षा, प्रमुख, धारण करने योग्य—वह हम सब की श्रेय-प्रेय-सभ्यता है, वही श्रेय, अनुशासन, वेद-धर्म प्राप्त हुआ है । मनुष्य-शक्ति के लिए, कर्त्तव्य शिक्षा—सम्बन्ध जानकारी के बिना, अतः उक्त धारणा के द्वारा, अपनी रुचि बनाए बिना तुम्हारा जीवन संस्कार अधूरा होगा । श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को गीता धर्म में कहा है कि कोई प्राणि कर्म किए बिना रह नहीं सकता—ऐसी कर्म की गति है । और सर्व सतों की भी यही मति है । सर्व शास्त्र भी यही कहते हैं कि तुम्हें यहां कर्म द्वारा-मनुष्य शक्ति से-स्वर्ग-नरक और मुक्ति प्राप्त होगा ।

यह सच है कि मुझे विचार, ज्ञान, मेरे राम को अपना ही आत्म—ब्रह्म ने प्रदान किया है । हे प्रिय दर्शन !

मैं धन्य हूं कि मनुष्यतन—श्री, जीवन प्राप्त हुआ है । और यह शरीर नाशवान भी है, तो अब इस संसार में शरीर छोड़ने के पहले हमें अपने जीवन सम्बन्धी, अपना ध्येय लक्ष्य "इष्ट" निश्चय और दृढ़ निश्चय कर लेना अत्यन्त आवश्यक है सर्व धर्म में—सत्य योग है । वह शुद्ध तत्त्व केन्द्र......दर्शन उपनिषद, विज्ञान, बोध

गीता—रामायण में भी हम अपने भी उचित गति—लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। जो अनादि मत से हमारी स्वयं का ही आत्म शक्ति है।

★ हरि ॐ ★

॥ स्वयं "प्राण और ब्रह्म" दर्शन ॥

ॐ मनुष्य वाणी से जो बातचीत करता हैं, यह मानी ब्रह्म ही प्रकाशित हो रहा है। जब यह नहीं बोलता उस समय मानो यह वक् - इन्द्रिय मर जाती है। उस समय वाणी का तेज नेत्रों को प्राप्त हो जाता है और प्राण, प्राणवायु में मिल जाता है। यह मनुष्य नेत्र द्वारा जो देखता है। यह मानों ब्रह्म ही प्रकाशित हो रहा है। जब नेत्रों से नहीं देखता, उस समय (आंख) मानोनेन्द्रियां मर जाती है। उस समय नेत्र का तेज श्रवणन्द्रिय को प्राप्त हो जाता है तथा प्राण प्राण में ही मिल जाता है यह जो श्रवण (कान) द्वारा सुनता है यह मानो ब्रह्म ही प्रकाशित हो रहा है जब यह नहीं सुनता तब मानो श्रवणन्द्रिय मर जाती है। उस समय उस का तेज मन को ही प्राप्त हो जाता है और प्राण प्राण में मिल जाजा है। यह जो मन से ध्यान चिन्तन करता है। यह मानो ब्रह्म ही प्रकाशित हो रहा है। जब चिन्तन नहीं करता तब मानो मर जाता है। उस समय उसका तेज प्राण को ही प्राप्त हो जाता है। और प्राण भी प्राण में ही मिल जाता है।

इस प्रकार ये सम्पूर्ण वाक् (बोली) आदि देवता प्राण में ही प्रवेश करके स्थित होते हैं। प्राण में लीन हो कर वे नष्ट नही होते। अतएव पुनः प्राण से ही उनका प्रादुर्भाव होता है।

प्रिय बालो :—

यह उपनिषद है यह बोधक बोध, सतचित आनन्द – धर्म अध्यात्म प्राण विद्या विज्ञान है, इस रहस्य को जानकर मनुष्य कर्त्तव्य शक्ति से श्रेष्ठता को प्राप्त होता है उसका कोई शत्रु कुछ नहीं बिगाड़ सकता वह मान यश को प्राप्त होता है । उसका वाक् व्यर्थ नहीं होते ।

प्रिय, बालको मन लगाकर प्रेम पूर्वक सुनो !

संगीत – विद्या और तन्त्र विद्या यन्त्र तथा किसी प्रकार की जानकारी करने में उसी प्रकार कर्म तुम्हें करने पड़ेंगे । किन्तु .... जो ज्ञान दृढ़ नहीं होता वह व्यर्थ हो जाता है । तदवत् ध्यान न देने से विचार किया हुआ श्रवण, सन्देह से, मंत्र और चञ्चल चित्त होने से जप निष्फल हो जाता है ।

ॐ श्री गुरु—स्तुति

(स्वामी रामतीर्थ की आध्यात्मिक मस्ती)

(राग पीलु ताल दीप चन्दी)

तिरी मेरे स्वामी । यह बांकी अदा है ।
कहीं दास है तू, कहीं खुद खुदा है ।। १ ।।
कहीं कृष्ण है तू, कहीं राम है तू ।
कहीं संगी है तू, कहीं तू जुदा है ।। २ ।।

पिलाया है जब से मुझे जाम तू ने ।
तिरी आंख में क्या नया गुल खिला है ॥३॥
निरे इश्क के बह्र में मस्त हूं मैं ।
बका में फना है फना में बका हैं ।४॥
मुनज्जह तिरी जात तशबीह से फारग ।
मगर रंग तशबीह का तुझ पर चढ़ा है ॥५॥
नजारा तेरी 'राम" हरा जा पै देखूं ।
हर एक नगमां ए जान। तेरी सदा है ॥६॥

1. द्रवी, 2. प्रेम रस का प्याला, 3 अद्भुत दृष्टि, 4. प्रेम सागर: 5. अमृत, अस्तित्व, 6. मृत्यु. 7. शुद्ध पवित्र, 8. स्वरूप, 9. प्रमाण, दष्टान्त, 10. रहित, जो अलग हुआ हो, 11. दृश्य, दर्शन, 12. गीत-राग, ध्वनि, 13. न्योछावर, समर्पण ॥

स्वामी विवेकानंद जी महाराज के आत्म संदेश

"कर्तव्य--बल"

मेरे साहसी युवको, यह विश्वास रखो कि तुम्ही सब कुछ हो। महान कार्य करने के लिये इस धरती पर आए हो। गीदड़ धुड़कियों से भयभीत न हो जाना—नहीं, चाहे वज्र भी गिरे तो भी निडर खड़े हो जाना और कार्य में लग जाना ;

तुम्हारे देश को लोगों की आवश्यकता है अतः वीर बनो। पर्वत की भांति अडिग रहो। 'सत्य मेव जयते'—सत्य की ही सदैव विजय होती है। भारत चाहता है एक नई विद्युत शक्ति, जो राष्ट्र के नस—नस में नया जींवन संचार करदे। मेरे शिष्य कायर न हो। मुझे कायरता से घृणा है। गम्भीर से गम्भीर

कठिनाइयों में भी अपना मानसिक सन्तुलन बनाए रखो; क्षुद्र अबोध जीव तुम्हारे विरुद्ध क्या कहते हैं; इसकी तनिक भी परवाह न करो। पर्वतकाय विघ्नबाधाओं में से होते ही सारे महान कार्य सम्पन्न होते हैं। अपना पुरुषार्थ प्रकट करो।

आत्म—संयम

जिसने अपने ऊपर संयम कर लिया है, वह बाहर की किसी भी वस्तु द्वारा प्रभावित नहीं किया जा सकता; उसके लिये गुलामी फिर और नही रहजाती। उसका मन मुक्त हो गया है; केवल ऐसा व्यक्ति ही संसार में सुख से रहने योग्य है :

मनुष्य भले ही राजनीतिक और सामाजिक स्वतन्त्रता हासिल कर ले, पर यदि वह अपनी वासनाओं का दास है तो वह यथार्थ में मुक्ति का पवित्र आनन्द अनुभव नहीं कर सकता।

भारत का सनातन धर्म

वही सत्य सबसे बढ़कर हैं, जो सब काल के लिए सत्य है, जो मनुष्य की प्रकृति पर प्रतिष्ठित है, जिसका परिवर्तन तब तक न होगा, जब तक मनुष्य के शरीर मे प्राण रहेगे ।

हमें धर्म का प्रत्यक्ष दर्शन करना होगा, उसकी उपलब्धि करनी होगी। तभी ऋषित्व की उज्जवल ज्योति से पूर्ण होकर हम महा-पुरुष–पद प्राप्त कर सकेंगे, तभी हमारे मुख से जो वाणी निकलेगी, वह अव्यर्थ और अमोघ शक्ति से पूर्ण होगी।

———.—

नाम महिमा —

एकाक्षर ब्रह्मजिज्ञासा—ॐ कारोपासना:—

(❀ वैदिक शान्ति–पाठ ❀)

ॐ सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवाव है।
ते जस्वि नावधीतमस्तु, मा विद्विषाव है ॥
ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

हे परमात्मा ! आप गुरु शिष्य दोनों की साथ साथ सब प्रकार से रक्षा करें, हम दोनों की अध्ययन की हुई उपनिषद् ब्रह्म विद्या हमारे लिए तेज पूर्ण हो। हम दोनों जीवन भर परस्पर स्नेह सूत्र से बधे रहे। सर्व प्रकार के विघ्न दुःख-संताप की निवृत्ति हो।

ब्रह्मस्तुति मन्त्र

ॐ जाग्रदादि त्रयोन्मुक्त
जाग्रदादिमय तथा।
ओंङ्कारैक सुसंवेद्य यत्पद
तन्नमाम्यहम् ॥ (श्री शंकाराचार्य)

ॐ तत् सत् ॐ

ॐ पूर्णब्रह्म आतम है तुरीय पद ।
नयनज्योत जगमग निसिवासर ॥१॥
नित्यानन्दं परम सुखमयं ।
अभय सनातन आदि निरञ्जन ॥२॥
वेद लक्ष्य सदा शिव शकर ।
अखिल अयन त्रय मूल निधानं ॥३॥

"आनन्द बन" नायक अभिनन्दन ।
ओत प्रोत हरिः कारणानन्दं ॥४॥

जै रागेश जै गौरीशम् ।
परब्रह्म शिव सच्चिदानन्दम् ॥५॥

ॐ

❀ निष्काम पुरुषार्थ प्राप्तीकरितां ईश प्रार्थना ❀

वह शक्ति हमें दो दयानिधे
कर्तव्य-मार्गपर डट जावें ।
पर सेवा, पर-उपकार में हम
जग-जीवन सफल बना जावें ॥वह॥

हम दीन-दुःखी निबलों-विकलों के,
सेवक बन संताप हरे ।
जो हैं अटके, भूले भटके
उनको तारें खुद तर जावें ॥ वह ॥

छल, दम्भ, द्वेष, पाखंड झूठ
अन्याय से निशिदिन दूर रहे ।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना
शुचि प्रेम-सुधारस बरसावें ॥ वह ॥

निज आन-बान मर्यादा का,
प्रभु ध्यान रहे, अभिमान रहे ।
जिस देश-जाति में जन्म लिया
बलिदान उसी पर हो जावें ॥वह॥

प्रिय बालको . . . . . तुम जानते हो

उस परमात्माका क्या रूप है ?

वेत कहते हैं—

'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म ।' (तैत्ति० २ । १ । १)

वह ब्रह्म सत्य, ज्ञानस्रूप एवं अनन्त है ।

भागवत में भी लिखा है—

विशुद्धं केवलं ज्ञानं प्रत्यक्सम्यगवस्थितम् ।
सत्यं पूर्णमनाद्यन्तं निर्गुणं नित्यमद्वयम् ।।
ऋषे विदन्ति मुनयः प्रशान्तात्मेन्द्रियाशयाः ।
(२ । ६ । ३९—४०)

ज्ञानमात्रं परं ब्रह्म परमात्मेश्वरः पुमान् ।
दृश्यादिभिः पृथग्भावैर्भगवानेक ईयते ।।
(३ । ३२ । २६)

ब्रह्म सत्य है, सदा रहा है, है भी, सदा रहेगा भी । वह ज्ञानमय, चैतन्य और आनन्दस्वरूप है । उसका स्वयं शरीर नहीं है, किन्तु विनाशवान् शरीरों में बैठकर वह संसार की लीला कर रहा है । वह केवल निर्मल ज्ञानस्वरूप है । उसका आदि नहीं, अन्त नहीं । वह नित्य और अद्वितीय है । एक होने पर भी अनेक रूपों में दिखाई देता है ।

दूसरे स्थान में कहा है—

शरीरों के भीतर बैठा हुआ आत्मा पुराणपुरुष साक्षात् स्वयं प्रकाश, अज, परमेश्वर, नारायण, भगवान् वासुदेव अपनी माया से अपने रचित शरीरों में रम रहा है ।

ब्रह्मका पूर्ण और अत्यन्त हृदयग्राही निरूपण—वेद, उपनिषद् और पुराणों का सारांश—भागवत के एकादश स्कन्ध के तीसरे अध्याय में दिया हुआ है।

राजा जनक ने ऋषियों से कहा—'हे ऋषिगण! आप लोग ब्रह्म ज्ञानियों में श्रेष्ट हैं, अतएव आप मुझे यह बताइये कि जिन को नारायण कहते हैं, उन पर ब्रह्म परमात्मा का ठीक स्वरूप क्या हैं?'

पिप्पलायन ऋषि ने कहा—'हे नृप! जो इस विश्व के सृजन, पालन और संहार का कारण है परन्तु स्वयं जिस का कोई कारण नहीं है; जो स्वप्न, जागरण और गहरी नींद की दशाओं में भीतर और बाहर भी वर्तमान रहता है; देह, इन्द्रिय, प्राण और हृदय आदि जिस से सञ्जीवित हो कर अर्थात प्राण पाकर अपने-अपनेकार्य में प्रवृत होते हैं उसी परमतत्व को नारायण जानो। जैसे चिनगारियां अग्नि में प्रवेश नहीं पा सकतीं, वैसे ही मन, वाणी, आंखे, बुद्धि, प्राण और इन्द्रियां उस परमतत्त्व का ज्ञान ग्रहण करने में असमर्थ हैं और वहां तक पहुँच न सकने के कारण उस का निरूपण नहीं कर सकती।'

'वह परमात्मा कभी जन्मा नहीं, न वह कभी मरेगा, न वह कभी बढ़ता है और न घटता हैं; जन्म-मरण आदिसे रहित वह सब बदलती हुई अवस्थाओं का साक्षी है एव सर्वत्र व्यापक है, सब काल में रहा है और रहेगा, अविनाशी है और ज्ञानमात्र है। जैसे प्राण एक है तो भी इन्द्रियों के भिन्न होने से आँखें देखती है, कान सुनते हैं, नाक सूंघती है इत्यादि भावों के कारण एक दूसरे से भिन्न प्रतीत होते हैं, ऐसे ही आत्मा एक होने पर भी भिन्न भिन्न देहों में अवस्थित होने के कारण भिन्न प्रतीत होता है।

'जितने जीव जरायु से उत्पन्न होते है—मनुष्य, गौ, घोड़े, हाथी, सिंह, कुत्ते, भेड़, बकरी आदि, जो पक्षीवर्ग अण्डों से उत्पन्न होते हैं, जो कीटवर्ग पसीने, मैल आदि से उत्पन्न होते हैं और जो वृक्षवर्ग (पेड़-विटप) पृथ्वी को फोड़ कर उगते हैं, इन सबों में सम्पूर्ण सृष्टि में जहां-जहां जीव के साथ प्राण दौड़ता हुआ दिखायी देता है, वहां-वहां ब्रह्म है। जब सब इन्द्रियां सो जाती है, जब 'मैं हूं' अह अहंभाव भी लीन हो जाता है, उस समय जो निर्विकार साक्षीरूप हमारे भीतर बैठा हुआ ध्यान में आता है और जिस का हमारे जागने की अवस्था में हम अच्छे सोये' 'यह सपना देखा' इस प्रकार की स्मृति होती हैं वही ब्रह्म है इत्यादि।

यह ब्रह्म कहां है ?

वेद कहते हैं—

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः
सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः
साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च ॥

(श्वेता० ६ । ११)

एक ही परमात्मा सब प्राणियों के भीतर छिपा हुआ है, सब में व्याप रहा है, सब जीवों के भीतर का अन्तरात्मा हैं, जो कुछ सृष्टि में हो रहा है, उस का नियन्ता है। सब प्राणियों के भीतर बस रहा हैं, सब ससार के कार्यों का साक्षी रूप में देखने वाला, चैतन्य, केवल, एक, जिस का कोई जोड़ा नहीं और जो गुणों के दोष से रहित है।

वेद, स्मृति, पुराण कहते हैं कि यह देवो का देव अग्नि में, जल में; वायु में, सारे भुवन में, सब औषधियों में, सब बनस्पतियों में जब जीवधारियों में व्याप रहा हैं।

उपदेश

"राग देश—ताल दादरा"

(आत्मगीत, स्वामी रामतीर्थ)

" ॐ ब्रह्म बोध "

मरे न टरे न जरे हरे तम, परमानन्द सो पायो ।
मंगल मोद भरयो घट भीतर, गुरु श्रुति ब्रह्म त्वमेव बतायो ॥
टूटी ग्रन्थी अविद्या नाशी, ठाकुर सत राम अविनाशी ।
लय मुझ में सब गयोरे वाको, वासुदेव सोंह कर झांकी ।
अहनिशका सूरज में नाश, अहं प्रकाश, प्रकाश, प्रकाश, ।
सूर्य को ठंडक लगे जल को लगे प्यास ?
आनन्द घन मम राम से क्या आशा को आस ॥

ॐ तात्पर्य:—जैसे दिन रात सूर्य में लय हों जाते हैं वैसे हीं मुझ प्रकाश स्वरूप आत्मदेव में पाप और पुण्य सब लय हो जाते हैं। सम्भव है। सूर्य को ठंडक और जल को प्यास लगे परन्तु मुझ साक्षी आत्मा आनन्द घन, राम को किसी प्रकार की (वस्तुविषय) आशा नहीं हो सकती ।ॐ।

ऋषि कहते है . . .

उस सब सामर्थ्य और अधिकार रखने वालों के सबके बड़े परम ईश्वर, देवताओं के सब से बड़े देवता, स्वामियों के सब से बड़े स्वामी, सारे त्रिभुवन के स्वामी, परम पूजनीय देव को हम लोगों ने जाना है ।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं –

सोइ सच्चिदानन्दघन रामा । अज विज्ञानरूप बलधामा ॥
व्यापक व्याप्य अखण्ड अनन्ता । अखिल अमोघ शक्ति भगवन्ता ॥
अगुण अदभ्र गिरा गोतीता । समदर्शी अनवद्य अजीता ॥
निर्मल निराकार निर्मोहा । नित्य निरंजन सुखसन्दोहा ॥
प्रकृति पार प्रभु सब उरबासी । ब्रह्म निरीह विरज अविनासी ॥
इहां मोहकर कारण नाहीं । रवि–सम्मुख तम कबहुं कि जाहीं ।

सूरदास जी ने कहा है—

जगत्पिता जग के आधार ।
तुम सबके गुरु सबके स्वामी,
तुम सबहिन के अन्तर्यामी ॥
हम सेवक तुम जगत अधार,
नमो नमो तुम्हें बारम्बार ।
सर्व शक्ति तुम सर्व अधार,
तुम्हें भजै सो उतरै पार ॥
घट-घट माहिं तुम्हारो बास,
सब ठौर जिमि दीप-प्रकाश ।
एहि विधि तुमको जानै जोई,
भक्त रु ज्ञानी कहिये सोई ॥
जगत-पिता तुम ही हो ईश,
याते हम विनवत जगदीश ।
तुमसम द्वितिय और नहि आहि,
पटतर देहि नाथ हम काहि ॥
नाथ कृपा अब हम पर कीजै,
भक्ति आपनी हमको दीजै ।

प्रेम भक्ति बिन कृपा न होई,
सर्व शास्त्र में देखँ जोई ॥
तपसी तुमको तप करि पावें,
सुनि भागवत गृही गुण गावै ।
कर्मयोग करि सेवत कोई,
ज्यों सेवै त्यों ही गति होई ॥

तीन लोक हरि करि विस्तार,
ज्योति आपनी करि उंजियार ॥
जैसा कोऊ गेह सवार,
दीपक बारि करे उंजियार ॥
त्यों हरि-ज्योति आप प्रकटाई,
घट-घट में सोई दरसाई ।
नाथ तुम्हारी ज्योति-अभास,
करत सकल जग को परकास ॥
थावर-जंगम जहलौं भये,
ज्योति तुम्हारो चेतन किये ।
तुम सब ठौर सबनतें न्यारे,
को लखि सकै चरित्र तुम्हारे ॥

सो प्रकाश तुम साजे सदा,
जीव कर्म करि बन्धन बंधा ।

सर्वव्यापी तुम सब ठाहर,
तुमहिं दूर जानत नर नाहर ॥

तुम सबके प्रभु अन्तर्यामी,
जीव बिसर रह्यो तुमको स्वामी ॥

यह परमात्मा जीवरूप में प्रत्येक जीवधारी के हृदय के बीच में विराजमान है।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।
चेतन अमल सहज सुखराशी ॥

स्वयं भगवान ने गीता में कहा है—
ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
(१८ । ६१)

हे अर्जुन ! ईश्वर सब जीवों के हृदय में रहते हैं।

इस विषय में याज्ञवल्क्य मुनि ने सब वेदों का तत्व यों वर्णन किया है—

एक सौ चवालीस सहस्र हित और अहित नाम की नाड़ियां प्रत्येक मनुष्य के हृदय से शरीर में दौड़ी हुई हैं। उसके बीच में चन्द्रमा के समान प्रकाश वाला एक मण्डल है, उसके बीच में अचल दीप के समान आत्मा विराजमान है; उसीको जानना चाहिये। उसीका ज्ञान होने से मनुष्य आवागमन से मुक्त होता है।

यह आत्मा मनुष्य से लेकर पशु-पक्षी, कीट-पतंग, वृक्ष-विटप समस्त छोटे-बड़े जीवधारियों में समान रूप से विराजमान है

भगवत में भी स्वयं भगवान् का वचन है—

अहं ब्रह्मा च सर्वश्च जगतः कारणं परम।
आत्मेश्वर उपद्रष्टा स्वयंदृगविशेषणः ॥
आत्ममायां समाविश्य सोऽहं गुणमयीं द्विज।
सृजन् रक्षन् हरन् विश्व दध्रे संज्ञां क्रियोचिताम् ॥
(४ । ७ । ५०-५१

हम, ब्रह्मा और शिव संसार के परम कारण हैं, हम सबके आत्मा ईश्वर, साक्षी, स्वयप्रकाश और निर्विशेष हैं। हे ब्राह्मण वह मैं विष्णु) अपनी त्रिगुणमयी मायामें प्रवेश करके संसारको सृष्टि, रक्षा तथा प्रवेश करके ससारकी सृष्टि, रक्षा तथा प्रलय करता हुआ भिन्न-भिन्न कार्यों के अनुसार नाम धारण करता हूँ ।

इसीलिये ब्रह्मा, विष्णु, महेश इनको भिन्न-भिन्न मानना भूल है। ये एक ही परमात्माकी तीन संज्ञा हैं।

इसीलिये शिवपुराण में भी लिखा है—

शिवो महेश्वर श्चैव रुद्रो विष्णुः पितामहः।
संसारवैद्यः सर्वज्ञः परमात्मेति मुख्यतः ।।
नामाष्टकमिदं नित्यं शिवस्य प्रतिपादकम् ।
(६।९।१-२)

शिव, महेश, रुद्र, विष्णु, पितामह, संसार-वैद्य, सर्वज्ञ और परमात्मा—ये आठ नाम मुख्यरूप से शिवके बोधक हैं।

इसलिये यह स्पष्ट है 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' 'ॐनमो नारायणाय' 'ॐ नमः शिवाय' 'श्रीरामाय नमः' श्रीकृष्णाय नमः,—ये सब मन्त्र एक ही परमात्माकी वन्दना हैं।

———

ॐ

शिक्षा का एकमेव मार्ग :

ज्ञान की प्राप्ति के लिये केवल एक ही मार्ग है और वह है एकाग्रता। मन की एकाग्रता हीं शिक्षा का सम्पूर्ण सार है : ज्ञानार्जन के लिये निम्नतम श्रेणी के मनुष्य से लेकर उच्चतम योगी तक को इसी एक मार्ग का अबलम्बन करना पड़ता है। एकाग्रता की शक्ति जितनी अधिक होगी, ज्ञान की प्राप्ति भी उतनीं ही अधिक होगी। कोई चर्मकार भी यदि अधिक एकाग्रचित होगा तो जुता अधिक अच्छा साफ करेगा।

रसोइया एकाग्रचित होने से अधिक अच्छा भोजन पकायेगा। पैसा कमाने में अथवा ईश्वर को अराधना करने में या और भी कोई कार्य करने में जितनी अधिक एकाग्रता होगी, वह कार्य उतना ही अधिक अच्छा सम्पन्न होगा। यही एक खटखटाहट है, यही एक आगात है जो प्रकृति के द्वारों को खोल देता है, और ज्ञान रुपी प्रकाश को बाहर फैलाता है।

बालको

एकाग्रता की शक्ति ही ज्ञान के खजाने की एकमात्र कुंजी है, ध्यान का अभ्यास करने से मानसिक एकाग्रता प्राप्त होती है। अतः एकाग्रता के लिये ब्रह्मचर्य की आवश्यकता।

तथा कड़े ब्रह्मचर्य के पालन से भी विद्या अल्पकाल में ही अवगत की जासकती है, एक ही बार सुनो या जानी हुई बात को याद करने की अचूक स्मृति शक्ति आ जाती है।

ब्रह्मचारी के मस्तिष्क में प्रबल कार्यशक्ति और अमोघ इच्छाशक्ति रहती है पावित्र्य के विना आध्यात्मिक शक्ति नहीं आसकती है ब्रह्मचर्य द्वारा मानवजाति पर अद्भूत् प्रभुता प्राप्त होती है आध्यात्मिक नेतागण अखण्ड ब्रह्मचारी रहे और इसी से उन्हें शक्ति प्राप्त हुई थी !

———

विचार शक्ति और उसके उपयोग ॥

नवे प्रतिशत विचार शक्ति को साधारण मनुष्य व्यर्थ खो देता है, और इसी कारण वह सदा बड़ी बड़ी भूलें किया करता है। अभ्यस्त मन कभी भूल नहीं करता—मनुष्यों और पशुओं में मुख्य भेद केवल चित की एकाग्रता—शक्ति का तारतम्य ही है।

किसी कार्य की सफलता इसी पर निर्भर करती है। कला, संगीत आदि की अत्युच्च प्रविणता, इसी एकाग्रता का फल है।

वास्तवमें—विश्व अपना रहस्य खोल देने को तैयार है, केवल हमें यही जानना है कि इसके लिये किस तरह दरवाजा खटखटाया जाय—आवश्यक आघात करने की शक्ति और दृढ़ता एकाग्रता से प्राप्त होती है हे प्रिय दर्शन !

श्रद्धा ही सारी उन्नति का मूल है

एकवार फिर से सच्ची श्रद्धा की भावना लानी होगी, आत्मविश्वास को पुनः जगाना होगा, तभी हम उन सारी समस्याओं को धीरे-धीरे सुलझा सकेंगे, जो आज हमारे सामने है हमें आज इसी श्रद्धा की आशयकता है। मनुष्य मैं इसी श्रद्धा का तो अन्तर है अन्य किसी वस्तु का नहीं। वह श्रद्धा ही है,

जो एक मनुष्य को बड़ा और दूसरे को छोटा बनाती है । मेरे गुरुदेव कहा कहते थे जो अपने को दूर्बल समझता है, वह दूर्बल ही हो जाता है, और यह बिलकुल सच है। तुम में यह श्रद्धा आनी ही चाहिये। विदेशी जातियों में जो कुछ भौतिक शक्ति का विकास देखते हो, वह इसी श्रद्धा का परिणाम है, कारण उन्हें अपने बाहू बल पर विश्वास है, यदि तुम आत्मबल पर विश्वास रखो तो परिणाम और भी कितना अधिक न होगा। यह एक बात अच्छी तरह समझलो कि जो मनुष्य अथवा युवा-बालक वृद्ध-कोई भी प्राणी कहने का तात्पर्य वह स्त्री बालका ही-क्यों न होः—वास्तव में मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है ।

यदि कोई दिन-रात यही सोचता है अथवा वह सोचता रहे कि मैं दीन हिन हूं, नाचीज हूं—तो वह सचभुच नाचीज बन जायेगा।

अगर तुम सीचो कि मैं कुछ हूं, मुझ में शक्ति हैं, तो सचमुच शक्ति आ जायेगी। यह एक महान सत्य है, जिसका तुम्हें स्मरण रहना चाहिये। हम उस सर्वशक्तिमान प्रभु की सन्तान हैं—उस अनन्त ब्रह्माग्नि की चिनगारियां है। हम नाचीज कैसे हो सकते हैं ? हम सब कुछ हैं सब कुछ करने को तैयार हैं और सब कुछ कर सकते हैं।

हमारे पूर्वजों में ऐसा ही दृढ़ आत्मविशवास था इसी रुपी प्रेरणा-शक्ति ने उन्हें सभ्यता की ऊंची-से ऊंची सीढ़ी पर चढ़ाया था। और अब यदि अवनति हुई हैं, यदि कोई दोष आ गया है, तो तुम देखोगे इस अवनति का आरम्भ उसी दिन से हो गया, जब से हम अपने इस आत्मविश्वास को खो बैठे ।

इस श्रद्धा या आत्मविश्वास के सिद्धान्त का प्रचार करना ही मेरे जीवन का उद्देश्य है। मैं इस बात को दुबारा कहता हूं कि यह आत्मविश्वास मानवता का एक सबसे-शक्तिशाली अंग है।

पहले अपने आप में विश्वास रखो। यह जान लो भले ही एक व्यक्ति छोटा सा बुलबुला हो और दूसरा पर्वत के समान ऊंची तरंग, पर बुलबुले और तरंग दोनों के हो पीछे वही अनन्त सागर है। वही अनन्त सागर मेरा और तुम्हारा दोनों का आधार है। वही विश्वम्भर-प्राण प्रभु है वही सर्वेश्वर तथा अर्न्तयामी हैं।

जीवन, शक्ति और आध्यात्मिकता का वह अन्नत महा-सागर मेरा है; वैसा ही तुम्हारा भी अतः हे भाइयो। तुम अपनी सन्तानों को उनके जन्म काल से ही इस महान जीवन प्रद उच्च और तत्व की शिक्षा देना शुरु कर दो।

ॐ

(ज्ञानी का-इरादा)

अमेरिका—जापान, विश्व यात्रा के पश्चात्-स्वदेश वापसी समय पर, सत्य, असत्य विवेकान्तर-स्वामो रामतीर्थ जी महाराज के :—प्रण"

—: राग जंगलात, ताल चलन्त :—

हम रुखे टुकड़े खायेंगे। भारत पर वारे जायेंगें ॥
हम सूखे चने चबायेंगे। भारत पर जान मिटायेंगे ॥
हम नंगे उम्र बितायेंगे। भारत पर जान मिटायेंगे ॥
सूलों पर दौंड़े जायेंगें। कांटों को राख बनायेंगे ॥

हम दर दर धक्के खायेंगे। आनन्द की झलक दिखायेंगे ॥
सब रिस्ते नाते तोड़ेंगे। दिल इक आतम संग जोड़ेंगे ॥
सब बिषयों से मुंह मोड़ेंगे। सर सब पापों का फोड़ेंगे ॥
ॐ भारत माता की जय !!!

श्लोक

ॐ

श्री नाम महिमा में-"भगवान श्री नानक" (भक्ति योग;)
श्री श्री सर्वेश्वर हरि के, प्रातः स्मरण, मंगलाचरण वन्दनम् ॥

राग हिंडोल

तेरी कुदरत तू ही जाने और न दूजा जाने।
जिस नूं कृपा करे तू प्यारे सोई तुझे पिछाने ॥1॥
तेरी सेवा तुझ से होवे और न दूजा करता।
भगत तिरा सोई तुध भावे जिसनूं तूं रंगधरता ॥2॥
वड़दाता, तू बड़ दाना और नहीं कोई दूजा।
तू समरथ स्वामी मेरा, हौं क्या जाना तेरी पूजा ॥3॥
तेरा महल अगोचर मेरे प्यारे ! बिखम तेरा है भाना।
कहो नानक ढ़ह पया द्वारे; रखलेवो मुगध आजाना ॥4॥
ऊंचा अगम अपार—प्रभु कथन न जाय अकथ।
नानक प्रभु शरणागति राखन को समरथ ॥1॥
वासुदेव सर्वत्र में ऊन न कतहूं ठाय।
अन्तर बाहर संग है नानक काय दुड़ाय ॥2॥
लाल गोपाल गोविन्द प्रभु गहिर, गंभीर अथाह।
दूसरे नाहि अवर कोय, नानक बेपरवाह ॥3॥

रूप न रेख न रंग कछु त्रैगुण ते प्रभु भिन्न ।
तिसहि बुझाय नानका जिस होवे सुप्रसन्न ॥4॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

हरिः ॐ तत् सत् ॐ

(1) खाली, न्युन (2) कहीं भी (3) स्थान जगह (4) क्यों (5) दौड़ रहा है (6) उसे दर्शन देता या अनुभव करता है जिस पर वह स्वयं प्रसन्न होता है ।

ओ३म्

आत्मगीत

शक्ति हमारी है आतम हमारा ।
जहां सब हमारे फंसाना हमारा ॥ 1 ॥

मेरा जाने आलम, राहत वजुदा ।
अपने दुईका मैं, खुद हूं खुदारा ॥2॥

लीला उजागर महिमा पसारा ।
साखी नहीं कोइ, दूजा खुदारा ॥3॥

सुने बोल बोली, मन के लगन में ।
अपनाहि दर्शन परसन् नजारा ॥4॥

सारे जहां से निराला पुराना ।
नया नित भरोसा उम्मीदये दावन ।
दीदये शमां में भी आतम सितारा—
'आनन्दवन" तू है ! राहत दिलारा ॥5॥

जय भारत ॐ आत्ममहिमा

—: हम आर्य हैं :—

हम आर्य हैं हमारा
इतिहास है पुराना ।
है सूर्य ध्वज हमारा
किरणें असंख्य नाना ॥1॥
प्रातः सबन में हमने
विज्ञान वेद पाया ।
जिसकी विभा प्रभा से
संसार जगमगाया ॥2॥
शोभा है विश्व की हम
हम देव के दुलारे ।
वसु है वसुन्धरा के
हम हैं गगन के तारे ॥3॥
भूपर सदा हमारा
शासन सुचक्र घूमा ।
हम ही रहे सदा से
इस भूमि के सु भूमा ॥4॥
जीवन की जान हैं हम
हम प्राण हैं पावन के ।
रवि की हैं रश्मियां हम
हम मान हैं सुमन के ॥5॥
संसार को हमारा
गौरव गुमान भाया ।

सद्धर्म सभ्यता का
हम से विधान पाया ॥6॥
अपने अतीत को अब
हम वर्तमान कर दें ।
हम फिर दया से जग में
आनन्द ज्ञान भर दें ॥7॥

नोट—हमारे राष्ट्र पुरुषों के प्रेरणा-ले० पं० राम कृष्ण शर्मा, उक्त संस्कृति माला भाग (4) द्वारा प्राप्त आदर्श, गीता प्रेस गोरखपुर बालकों के पढ़ने योग्य, छः भागों में...

मुद्रण—प्रकाशित यह संस्कृति राष्ट्रभाषा हिन्दी सरल धर्म विज्ञान है ।

ॐ

सदा शिव गीत राग पहाड़ी

आत्म ज्ञान

एक सत्य नित्य मुक्त दूजा परवेश ना ।
आतमा असंग सदा कोई भी कलेश ना ॥
जाग जग झूठ सब सुपने की माया है ।
मिथ्या नाम रूप नाहक चित्त भरमाया है ॥
तू तों स्वयं शुद्ध ब्रह्म दूजा दरवेश ना ॥ आ०
अमर अभय पद शिव जगदीश तू ही ।
अखंड "आनन्दवन" परम स्वरुप तू ही ॥
किसी संग राग नाही, किसी संग द्वेष ना ॥ आ०

ॐ

श्री भगवान बुद्ध उपदेश प्रथा

गौतम बुद्ध ने संसार के कल्याण के लिए बीच का (सहज) मार्ग बतलाया है, क्योंकि न तो इन्होंने भोग रोग-विलास की आज्ञा दी है और न कठोर तपस्या की। क्योंकि, मनुष्य के कर्म ही उसे ऊंचा और नीचा बनाते है। अतः वे अहिंसा पर बड़ा जोर देते थे। वे कहते थे कि मनुष्य की इच्छाएं ही संसार के दुखों की कारण हैं। व्यर्थ चेष्टा—इच्छाओं को जीतने से वह दुखों से छुटकारा पा सकता हैं।

इच्छाएं नीचे दिये हुए आठ मार्गों पर चलने से जीती जा सकती हैं :—"हमारे दैनंदिन जीवन में क्रियावान-उपयोगी धारणा, एवं पालनिय नियम यह है; (1) ठीक समय (2) ठीक विचार (3) ठीक वार्तालाप (बोलचाल) (4) ठीक चलन (रिती-रिवाज) (5) ठीक जीवन (6) ठीक प्रत्येक (7) ठीक सोची-(2) ठीक सुख एवं — ——अति सर्वत्र वर्जते :—

ॐ... ...हे प्रिय, बालकों—सत्य असत्य, निर्णय द्वारा जब गौतम को ज्ञान प्राप्त हुआ—वे बुद्ध हो गये।

तृप्त आत्मा ज्ञान—विज्ञान युक्त—(गौतम) बुद्धत्व प्राप्त करके वे काशी आये। काशी के पास सारनाथ नामक स्थान में ही उन्होंने धर्म चक्र का प्रवर्तन आरम्भ किया था। उनकी शिक्षा के मुख्य—चार उपदेश हैं, जो चार आर्य सत्य कहे जाते है। (1) दुःख क्या है ? (2) दुःख कैसे उत्पन्न होता है ? (3) दुःखों का मिटाना क्या है ? (4) दुःख कैसे मिटते हैं ? यही

चार अर्थ सत्य हैं। साधन रूप में वे आर्य—अष्टाङ्गिक अर्थात् आठ श्रेष्ठ अंगों वाले मार्ग बताये हैं :—जो यह है :—(यथाउचित नियम पूर्वक (1) सम्यक दृष्टि (2) सम्यक् संकल्प, (3) सम्यक् कर्मान्त (कर्म) (5) सम्यक् आजीव (जीविका) (6) सम्यक् व्यायाम, (7) सम्यक् स्मृति, और (8) सम्यक् समाधि, यह आत्म संयम धर्म है।

"संक्षिप्त योगवासिष्ठ व्याख्यान"

भगवान श्री रामचन्द्र जी को वेदान्त धारणा के प्रति ज्ञान योग प्रकरण का यथाउचित—क्रमउपदेश।

गुरु —श्री वसिष्ठ जी बोले – हे महाबुद्धिमान राम ! इस संसार में श्रेष्ठ संत समागम मनुष्यों का संसार सागर से उबारने में सर्वत्र विशेष रूप से उपकार करता है। इसलिये, मुख्यतः संतोष, सत्संगति, विचार और शम-येही चारों मनुष्यों के लिये भवसागर से तरने के साधन हैं।

इनमें संतोष परम लाभ है। सत्संगति परम गति है। विचार उत्तम ज्ञान है और शम परमोत्कृष्ट सुख है। ये चारों ससार का समूल विनाश करने के लिये विशुद्ध उपाय हैं। जिन्होंने इनका भलि भांति सेवन किया, वे मोह जल से परिपूर्ण भवसागर से पार हो गये। हे राम जी, इन चारों साधन में से विशुद्ध प्रकाश वाले एक हीं साधन का अभ्यास हो जाने पर शेष तीनो भी अवश्य अभ्यास हो जाते हैं; क्योंकि इन में से एक एक भीं क्रमशः इन चारों की जन्मभूमि है अतः सबकी सिद्धि के लिये यत्नपूर्वक एकका तो पूर्ण रूप से आश्रय लेना ही चाहिये।

'हमारे दयालू :–भगवान महावीर वज्रवत विरता'

"श्री जैन धर्म"

महावीर का संदेश था जिओ और जीने दो।

महावीर का सर्व प्रथम उपदेश था अहिंसा-उन्होंने बताया कि सब कोई जीना चाहते हैं और सब को अपना जीवन प्रिय है। सब कोई सुखी बनना चाहते है और दुःख से कोसों दूर भागते हैं। इसलिये संसार के किसी भी प्राणी को यहां तक कि छोटे—छोटे कीड़े-मकोड़ों को भी न मारो और न कष्ट ही पहुंचाओ। उन्होंने बताया कि झूठ बोलना, चोरी करना, और चीजों का जरूरत से ज्यादा संग्रह करना भी घोर हिंसा है। ससार में सुख और शान्ति स्थापित करने का यही एक मात्र उपाय है। जो मन वचन और कर्म से इन सब हिंसाओं से दूर रहता है, वही सच्चा अहिंसक है। अहिंसक बहुत बलवान और निडर होता है वह मृत्यु से भी नहीं डरता है। निर्बल अहिंसा का कभी पालन नहीं कर सकता। उन्होंने बताया कि गरीब, अमीर, शुद्र, क्षत्रिय, वैश्य और ब्राह्मण सभी बराबर हैं स्त्री—पुरुष सभी के अन्दर एक हीं आतमा विराजमान है। स्त्री-शिक्षा पर उन्होंने बहुत जोर दिया और बताया कि स्त्री और पुरुष का दर्जा बराबर है तथा दोनों का स्थान अधिकार और कर्तव्य है। इसलिए सब को समान अधिकार होना चाहिए।

वे कहते थे :—ढोंग और अडम्बर में धर्म नहीं है बल्की धर्म है मन की पवित्रता में राग और द्वेष के त्याग में और अपनी आत्मा की पहिचान में।

वस्तुओं के प्रति लोभ और मोह से ही होती है और लड़ाईयां होती हैं, इस लिए हम इसे हटाना चाहिए। सीधा सादा जीवन

विताना चाहिए और आवश्यकता से अधिक चीजों को संग्रह नहीं करना चाहिए ।

ॐ

"प्रातः स्मरणं"

श्री हरिः सर्व व्यापक निर्गुण स्वरूप ।
हमारे परम आत्मा के मंगलाचरण ॥

"राग बरवा ताल तीन"

है आरिफों के दिल में; भगवन मुकाम तेरा ।
और वेद पाठियों के, लव पर है नाम तेरा ॥1॥
काशी चे बुतकदों में, कुछ तू नहीं मुकेयद ।
हर जा है तेरा मन्दिर, हर जा है धाम तेरा ॥2॥
जपते हैं तुझको प्यारे, दुनियां के जीव सारे ।
हस्ती का तेरी शाहिद, हर एक काम तेरा ॥3॥
दिल साफ कर लिया है, दुनिया के मल से जिसने ।
वह देखता है दिल में, दर्शन मुदाम तेरा ॥4॥
आजाद को सिखा दो, प्रीती की रीती अपनी ।
जिससे अमर हो पी के, अमृत का जाम तेरा । 5॥

नोट :– "अर्थ-परिचय"

आरिफों=आत्मज्ञानियों, लव=ओष्ट पर, बुतकदों=मंदिरों नुकैयद=परिच्छन्न ढ़का हुआ, जा=कैद में=स्थान देश, हस्ती अस्तित्व, शाहिद=साक्षी, मल=मनमैल, मुदाम=नित्य सर्वदा, जाम=पयाला ।

"राष्ट्रभाषा"

शक्ति प्रबोधक शिक्षा व्याख्यान-क्लब

"बाल सभा की आत्म प्रतिज्ञा"

"अथर्ववेद" मन्त्र

ॐ अहं राष्ट्रस्या भीवर्गो निजो भूयासमुत्तमः ॥ 3-1-5

अर्थ—मैं अपने पुरुषार्थ से सम्पूर्ण राष्ट्र को अपने वश में करके सर्वश्रेष्ठ बनूं ॥

ॐ अरिष्टाः स्याम तन्वा सुबीराः ॥ 5-3-1

अर्थ—हम शरीर से निरोग रहते हुये उत्तम वीर बनें ॥

ॐ प्रियं मा कृणूदेवेषु ॥ 18-62-1

अर्थ—हे प्रभो ! मुझे ब्रह्मज्ञानी देब सदृश विद्वानों में प्रिय बनाओ ॥

"आत्म मन्त्र"

"विश्व कल्याण कामना"

ॐ सर्वे च सुखिनः सन्तु,
सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा काश्चिद् दुःख भाग भवेत् ॥

हे जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति के प्रभु परमात्मा हे आत्म नयंन हरिः- सर्व प्राणी सुखी हों, सब निरोग हों सब सुख सोभाग्य देखे कोई दुखी न हों जीव जगत का मंगल होयें ॥ ॐ शान्तिः !!!

—):o:(—

ओ३म्

प्रार्थना

तन मन वचन से होंगे हम शुद्ध ब्रह्मचारी ।
दुष्कर्म से बचेंगी ये इन्द्रियां हमारी ॥
वाणी मधुर मनोहर प्रिय प्राण शक्तिशाली ।
होंगी हमारी आखें सुर दिव्य ज्योति वाली ॥
होंगे ये कान निर्मल नाभी विमल सुखारी ।
होगा हृदय दया मय यह शुद्ध शांति कारी ॥
तेरे गुणों की गाथा गावेगा कण्ठ मेरा ।
शिर में रसेगा केवल गौरव अनन्त तेरा ॥
होंगे ये हाथ मेरे बल कीर्ति के पुजारी ।
मेरी हथेलियां ये होंगी पवित्र प्यारी ॥

ओ३म्

जीवन स्वरूप भगवन्, मस्तक पवित्र कर दो ।
पावन पिता दया कर, आंखों में ज्योति भर दो ॥
आनन्द कन्द ईश्वर. हमको सुकण्ठ दीजे ।
सर्वेश ! मेरे उर में बस कर पुनीत कीजे ॥
जग के जनक हमारी हो नाभी निर्विकारी ।
पद भी पवित्र होवें हे. ज्ञान ज्योति धारी ॥
फिर भी पवित्र शिर हो हे सत्य रूप स्वामी ।
सब अंग शुद्ध होवे, व्यापक प्रभो नमामी ॥

—०—

शान्तिपाठ

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥*

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ=सच्चिदानन्दघन; अदः=वह परब्रह्मः पूर्णम्=सब प्रकार से पूर्ण है; इदम्=यह (जगत् भी); पूर्णम्=पूर्ण (ही) है; (क्यौंकि) पूर्णात्=उस पूर्ण (परब्रह्म) से ही; पूर्णम्=यह पूर्ण; उदच्यते=उत्पन्न हुआ है; पूर्णस्य=पूर्णके; पूर्णम्=पूर्ण को, आदाय=निकाल लेने पर (भी); पूर्णम्=पूर्ण; एव=ही; अवशिष्यते=बच रहता है ।

व्याख्या–वह सच्चिदानन्दधन परब्रह्म पुरुषोत्तम सब प्रकार से सदा सर्वदा परिपूर्ण है । यह जगत् भी उस परब्रह्म से ही पूर्ण है; क्योंकि यह पूर्ण उस पूर्ण पुरुषोत्तम से ही उत्पन्न हुआ है । इस प्रकार परब्रह्म की पूर्णता से जगत् पूर्ण है, इसलिये भी वह परिपूर्ण है । उस पूर्ण ब्रह्म में से पूर्ण को निकाल लेने पर भी वह पूर्ण ही बच रहता है ।

त्रिविध तापकी शान्ति हो ।

---

*यह मन्त्र बृहदारण्यक उपनिषद् के पाँचवें अध्याय के प्रथम ब्राह्मण की प्रथम कण्डिकाका पूर्वार्द्ध रूप है ।

भारत की आध्यात्मिक चिन्ताधारा

वेदों का कथन है कि मानव की आत्मा अमर है। शरीर वृद्धि और क्षय के नियमों से बद्ध है; जिसकी वृद्धि है, उसका क्षय भी अवश्यमेव होगा। परन्तु देहमध्यस्थ आत्मा तो असीम एवं सनातन है; वह अनादि और अनन्त है।

सच्चा धर्म सर्वत्र भावात्मक है—रचनात्मक है, अभावात्मक अथवा ध्वंसात्मक नहीं... सच्चे धर्म की कसौटी तो पवित्र पुरुषार्थ से उद्‌बुद्ध आत्मा ही है।

ईश्वर का व्यक्तित्व हम में अभिव्यक्त है, वह हममें है। हमारा विश्वास है कि समस्त धर्मों नें सत्य के बीज है और इसी लिए हिन्दू सबकी वन्दना करता है। हम परमात्मा को विभिन्न सम्प्रदायों के सर्वसुन्दर फूलों का गुलदस्ता अर्पण करेंगे।

—: हरिः ओ३म तत् सत् :—

(महा-मंत्र-गायत्री)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयो नः प्रचोदयात् ।

— शब्दार्थ —

ॐ—परमातमा, भूः—प्राणस्वरूप, भुवः दुख नाशक, स्वः—सुख स्वरूप, तत्—उस, सवितुः—तेजस्वी, प्रका-शवान, वरेण्यं—श्रेष्ठ, भर्ग—पापनाशक, देवस्य-दिव्यका, देने वाले का, धीमहि-धारण करे, धियो—बुद्धि, यो-जो, नः हमारी, प्रचो-दयात्-प्रेरित करे ।

– भावार्थ –

हे प्राणाधार, दूखों को दूर करने वाले सुखदाता तेजस्वी भगवान्, मैं आपके सुन्दर दिव्य रूप का ध्यान करता हूं जो बड़ा श्रेष्ठ है और आपको वरण करता हूं—(अपने आपको अर्पण करता हूं) कृपा कर हम सब की बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित कीजिये ।